वार्तालाप-588, निलंगा, दिनांक 21.06.08
Disc.CD No.588, dated 21.06.08 at Nilanga
Extracts-Part-1

समयः 03.30 - 06.10
जिज्ञासुः बाबा, 33 कोटि देवताओं में से 23 कोटि कलियुग के अंत तक आते हैं। तो फिर...
बाबाः द्वापर के आदि से लेकरके कलियुग अंत तक 23 करोड़ देवताएं परमधाम से इस सृष्टि पर उतरते हैं।
जिज्ञासुः उसका गायन पूजन कैसे होता है?
बाबाः वो किस कुल के हैं? इस्लाम कुल के हैं, बौद्धी कुल के हैं, क्रिश्चियन कुल के हैं या कोई पुराना कुल है जिस कुल से आते हैं? किस कुल से हैं? उनका कुल कौनसा है? ओरिजन कहाँ से है? सूत्रपात कहाँ से हुआ?
जिज्ञासुः आदि सनातन।
बाबाः आदि सनातन देवी-देवता धर्म से। इसलिए पूजनीय हैं। आज भी भारत में ऐसे-ऐसे परिवार हैं 50, 60, 70 लोगों की रोटी एक चूल्हे पर बनती है। एक मुखिया होता है पूरे परिवार का। और पूरे परिवार की व्यवस्था ऐसे चलती है जैसे कोई राज्य चल रहा हो। अनेक बेटे हैं। अनेक बहुएं हैं। अनेक भाई हैं। छोटे-बड़े का लिहाज़ रखते हैं। कोई भी छोटा अपने बड़े की बात को काट नहीं सकता। लेकिन ऐसे परिवार बहुत विरले हैं। कोई भी परिवार में सुख-शान्ति का मूल कारण क्या होता है? प्योरिटी। इम्प्योरिटी जब बढ़ती है तो लड़ाई-झगड़े होते हैं।
जिज्ञासुः भारत में ही उतरते होंगे, अवतरित होते हैं।
बाबाः जो भारत के ही हैं वो भारत में ही उतरेंगे ना। 33 करोड़ देवताएं हैं। 33 करोड़ देवताओं में से एक-एक में दूसरे धर्म की सोल प्रवेश करती रहती है क्योंकि देवताएं ही सबसे जास्ती पतित बनते हैं।

Time: 03.30 - 06.10
Student: Baba, 23 *crore* (230 million) [deities] among 33 *crore* (330 million) deities come till the end of the Iron Age. So, then….
Baba: From the beginning of the Copper Age to the end of the Iron Age, 23 *crore* deities descend from the Supreme Abode to this world.
Student: How are they praised and worshipped?
Baba: To which clan do they belong? Do they belong to the Islam clan, to the Buddhist clan, to the Christian clan or is there any old clan to which they belong? To which clan do they belong? What is their clan? Where is their *origin*? From where did they originate?
Student: *Aadi Sanatan* [religion].
Baba: From the *Adi Sanatan Devi-Devata Dharma* (the Ancient Deity Religion). This is why they are worship worthy. Even today there are such families where meals for 50, 60, 70 people is cooked in the same kitchen. There is one head of the entire family. And the entire family is managed in such a way as if a kingdom is being run. There are many sons. There are many daughters-in-law. There are many brothers. Young and old ones are given regard. No young one can interrupt the words of his elders. But such families are very rare. What is the root cause of

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

happiness and peace in any family? *Purity*. When *impurity* increases fights and quarrels take place.
Student: They descend, incarnate in India only.
Baba: Those who belong to India will descend in India only, will they not? There are 330 million deities; souls of other religions keep entering each one from among the 330 million deities because it is the deities who become most sinful.

समयः 08.25 - 10:41

जिज्ञासुः बाबा, एक भाई का प्रश्न है - मैं परमधाम का निवासी हूँ। उस परमधाम के अंदर सूरज, चांद, सितारों का कोई प्रकाश नहीं गिरता है। तो वो परमधाम में जो प्रकाश होता है वो लालिमा किसकी होती है? आत्मा तो परमधाम में जड़वत् होती है ना।

बाबाः परमधाम एक तुरीया तत्व है। वो तुरीया तत्व स्वयं ही प्रकाशित है। उसे और किसी सूरज चाँद सितारों आदि के प्रकाश की जरूरत नहीं है। वो परमात्मा का लोक है, आत्माओं का लोक है। आत्माएं ही सिर्फ वहाँ वास करती हैं। कोई स्थूल जड़ तत्व का वहाँ वास नहीं है। जडत्व या अंधेरा पैदा करने वाले वो सब इस दुनिया के हैं। स्वयं प्रकाशित लोक है। इस दुनिया में सूरज, चाँद, सितारों का प्रकाश है। ये स्वयं प्रकाशित नहीं है। वो भी कभी होता है, कभी नहीं होता है। कहीं ठहरता है, कहीं नहीं ठहरता है। और वो तो? वो तो स्थायी है। अविनाशी लोक है। अविनाशी प्रभाव है। अविनाशी वहाँ रोशनी है। इस दुनिया की रोशनी तो कम और ज्यादा होती रहती है। जैसे उत्तरी ध्रुव, दक्षिणी ध्रुव। कभी घोर अंधेरा हो जाता है। महीनों तक सोझरा ही सोझरा। तो महीनों तक सोझरा-सोझरा दिखाई भी नहीं पड़ता। अंधेरा ही अंधेरा हो जाता है। तो वो शाश्वत लोक है। इसलिए शाश्वत उजेला है।

Time: 08.25 - 10:41
Student: Baba, this is a question from a brother – (Baba says that) I am a resident of the Supreme Abode. The light of the Sun, the Moon, and the stars does not reach that Supreme Abode. So, the light, that red light (*laalima*) in the Supreme Abode is of what? The soul is in an inert stage in the Supreme Abode, isn't it?
Baba: The Supreme Abode is a unique element (*turiya tatwa*). And that unique element is self-luminous. It does not need the light of any Sun, Moon, stars, etc. That is an Abode of the Supreme Soul, an Abode of the souls. Only the souls reside there. No physical, inert elements reside there. All the inert elements or the elements which create darkness belong to this world. It (the Supreme Abode) is a self-illuminated world. There is the light of Sun, Moon and the stars in this world. It is not self- illuminated. Sometimes it is illuminated and sometimes it is not. It (the Sun) stops at some places and does not stop at some other places. And that (Supreme Abode) is…? That is permanent. It is an imperishable Abode. There is an imperishable effect [over there]. The light there is eternal. The light in this world keeps on decreasing and increasing. For example, the North Pole and the South Pole; sometimes, there is extreme darkness. There is light for months at a stretch and [sometimes] light is not visible for months together. There is complete darkness. So, that (Supreme Abode) is an imperishable Abode. This is why there is eternal light.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

समयः 10:50 - 11:41

जिज्ञासुः कर्मातीत आत्मा परमधाम जा सकती है? कर्मातीत अवस्था में आत्मा परमधाम जाती है क्या?

बाबाः हाँ जी। कर्मों का बन्धन रहा ही नहीं। जब चाहे और जितनी देर चाहे परमधाम की निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी स्टेज में टिक सकती है। कर्मों का बन्धन है तो कोई न कोई 63 जनमों वाली हिसाब-किताब वाली आत्मा आके सामने खड़ी हो जावेगी। कहाँ जा रहे हो? पहले हमसे तो निपट लो। पहले हिसाब किताब पूरा करो हमारा। तो युद्ध करना पड़े।

Time: 10:50 - 11:41

Student: Can a *karmaatiit* soul (soul beyond the effect of actions) go to the Supreme Abode? Does a soul go to the Supreme Abode in the *karmaatiit* stage?

Baba: Yes. There is no bondage of actions at all. [The soul] can remain constant in the incorporeal, vice less, egoless *stage* of the Supreme Abode whenever it wishes and for whatever duration it wants. If there is bondage of actions (*karmabandhan*), then one or the other soul having karmic accounts of 63 births will come in front of you [with the thought:] 'Where are you going? First deal with me.' First clear my karmic accounts. So, you will have to fight a war.

Extracts-Part-2

समयः 12.01-16.00

जिज्ञासुः बाबा, हमारा एक अलग प्रश्न है - इस दुनिया में जो कीटक हैं, कीटक। इस दुनिया में बारीक-बारीक जो कीटक हैं।

बाबाः कीटाणु।

जिज्ञासुः कीटाणु। और पशु, पक्षी, पेड़, इनमें तो जान है ना।

बाबाः ज्ञान?

जिज्ञासुः जान। आत्मा है ना।

बाबाः आत्मा है।

जिज्ञासुः हाँ। तो इनका पिता कौन है?

बाबाः वो ही परमपिता परमात्मा।

जिज्ञासुः परमपिता परमात्मा। ठीक है। अब परमपिता परमात्मा है तो इनको, जानवरों को ऐसे शरीर क्यों दिया है?

बाबाः दिया है?

जिज्ञासुः दिया होगा ना।

बाबा: दिया थोड़े ही। वो तो बना बनाया है नाटक।

Time: 12.01-16.00

Student: Baba I have a different question – the insects in this world, the minute insects which exist in this world...

Baba: Insects.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Student: Insects. And there is life in these animals, birds, trees, isn't it?
Baba: *Gyaan* (knowledge)?
Student: *Jaan* (life). There is a soul [in them], isn't it?
Baba: There is a soul.
Student: Yes. So, who is their father?
Baba: The Supreme Father Supreme Soul Himself.
Student: The Supreme Father Supreme Soul. OK. If it is the Supreme Father Supreme Soul, then why did He give the animals such a body?
Baba: Has He given them?
Student: He must have given.
Baba: He hasn't given. That is a pre-determined drama.

जिज्ञासुः किसने बनाया है वो ?
बाबाः बनाया नहीं। बनाया तो कब बनाया गया? ये सृष्टि तो अनादि है। न आत्मा बनाई जाती है। न परमात्मा बनाया जाता है और न 5 तत्व बनाए जाते हैं। न ही ये सृष्टि बनाई जाती है।
जिज्ञासुः मेरा प्रश्न है ये जानवरों का शरीर किसने दिया और उसका वजह क्या है?
बाबाः शरीर? अरे, ये 5 तत्वों से ही सब प्रकार के शरीर बनते हैं। क्या मनुष्य का, क्या पशु का, क्या पक्षी का, क्या कीटाणुओं का, सबके शरीर 5 तत्वों से ही बनते हैं।
जिज्ञासुः ये मनुष्य को क्यों नहीं दिया जाता है जानवरों का?
बाबाः अब ये कोई कहे कि यह ड्रामा है और ड्रामा में इस व्यक्ति को ही हीरो-हीरोइन का पार्ट क्यों दिया गया? दूसरों को क्यों नहीं दिया गया? अरे नाक यहाँ क्यों हीं रखी गई? यहाँ क्यों नहीं रखी? ये कोई प्रश्न थोड़ी ही होता है। ड्रामा में ऐसा ही नूँध है।
जिज्ञासुः ऐसा है मनुष्य को जानवरों का शरीर क्यों नहीं देता है बाबा? ये कहना है। मनुष्यात्मा मनुष्य में ही जाता है।
बाबाः मनुष्य शरीर में ही वो पाप कर्म भोग सकता है ज्यादा से ज्यादा। तो दूसरी योनि में जाने की क्या दरकार है?

Student: Who has made [the drama]?
Baba: It is not made. If it is made, [a question will arise] when was it made? This world is eternal. Neither the soul nor the Supreme Soul is made. And the five elements are not made either. Neither is this world created.
Student: My question is – who gave them these animal bodies and what is its reason?
Baba: Bodies? *Arey*, all kinds of bodies are made up of the five elements only. Be it of the human beings, be it of the animals, be it of the birds, be it of the insects; everyone's body is made up of the five elements only.
Student: Why aren't the human beings given [the bodies] of animals?
Baba: If someone says that this is a drama and why were only these particular persons given the role of *hero* or *heroine* in the drama? Why were other people given [that role]? *Arey*, why is the nose placed here (in front on the face) only? Why wasn't it placed here (on the head behind)? This is not a (valid) question. It is fixed like this itself in the drama.
Student: Baba, if it is so, why doesn't He give human beings the bodies of animals? This is what I want to say. A human soul is reborn as a human being only.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Baba: It can experience the sufferings of sins to the maximum extent in the human body only. So, where is the need to go to another species?

जिज्ञासुः ये जानवर बनाने की वजह क्या है?
बाबाः जानवर बनाए नहीं जाते।
जिज्ञासुः बनाए नहीं जाते?
बाबाः बने बनाए हैं। जानवरों की जो आत्मा है।
जिज्ञासुः मनुष्यों के लिए मॉडल है क्या जानवर?
बाबाः मॉडल नहीं है।
जिज्ञासुः क्या है? मनुष्य जानवर से सीखते हैं ना।
बाबाः मनुष्य के लिए खेल-खिलौना है। ये सारी दुनिया मनुष्य के लिए बनी हुई है।
जिज्ञासुः हमारा कहना है जानवरों से हम सीखते हैं। जानवर श्रेष्ठ हैं कि हम श्रेष्ठ है?
बाबाः जानवरों से सीखते हैं जब तमोप्रधान बन जाते हैं तब। सतयुग में देवताएं कोई जानवरों से नहीं सीखते थे। अभी हम ब्राह्मण हैं ऊंच ते ऊंच। तो न जानवरों से सीखते हैं न विद्वान पण्डित आचार्यों से सीखते हैं। हम किससे सीखते हैं? हम ऊँच ते ऊँच परमपिता परमात्मा से सीखते हैं जो जानवरों में प्रवेश नहीं करता है। जानवरों के आगे पढ़ाई नहीं पढ़ाता है। किसको पढ़ाता है? मनुष्यों को। मनुष्य एक मन वाला प्राणी है। जानवरों को मन नहीं होता है।

Student: What is the reason for creating these animals?
Baba: Animals are not created.
Student: Are they not created?
Baba: They are already created. The soul of animals...
Student: Are the animals models for the human beings?
Baba: They are not models.
Student: What are they? Human beings learn from animals, don’t they?
Baba: They are toys for human beings. This entire world is created for human beings.
Student: I mean to say that we learn from animals. So, are the animals elevated or are we elevated?
Baba: We learn from animals when we become *tamopradhan* (dominated by darkness or ignorance). In the Golden Age, the deities did not use to learn from the animals. Now we are the highest on high brahmins. So, we neither study from the animals nor from the scholars, pundits and teachers. From whom do we study? We study from the highest on high Supreme Father Supreme Soul who does not enter in animals. He does not teach the animals after coming. Whom does He teach? The human beings. Human being is a living being with mind. Animals do not have mind.

जिज्ञासुः ये जो तारे, ग्रह वगैरह हैं ये भी अनादि हैं क्या?
बाबाः बिल्कुल अनादि हैं।
जिज्ञासुः मगर वहाँ तो कोई मनुष्य सृष्टि नहीं है। कीटाणु नहीं है। कोई भी नहीं है।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबाः एक सोचने की बात है - एक पृथ्वी पर ही इतना अंतर है कि उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव पर कोई भी जीव जंतु नहीं है क्योंकि सूरज की किरणें तिरछी पड़ रही हैं वहाँ। जहाँ सीधी किर्ने पड रही वहाँ आसपास जीव जंतु है। तो पृथ्वी पर ही थोड़ी दूरी होने से कोई जीव जंतु वहाँ नहीं हैं। तो और सितारे और सूरज और चाँद ये तो कितने नज़दीक हैं और कितने दूर हैं। वहाँ तो जीव-जंतु होने का सवाल ही पैदा नहीं होता। (जिज्ञासु ने कुछ कहा) जीव-जंतु होने के लिए एक निश्चित दूरी चाहिए। वहीँ पर जीव-जंतु हो सकता है। इसलिए कोई भी मंगल ग्रह, कोई शुक्र ग्रह, कोई भी ग्रह-उपग्रह के ऊपर जीव-जंतु नहीं हैं सिवाय एक पृथ्वी।
जिज्ञासुः प्रकाशवर्ष दूर तारे जो हैं वो?
बाबाः ये प्रकाशित जो सितारे हो रहे हैं ये सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित हैं। स्वयं प्रकाशित नहीं हैं।

Student: Are these stars, planets, etc. eternal, too?
Baba: They are definitely eternal.
Student: But there is no human world there. There are no insects. There is nobody.
Baba: It is a topic to think – There is such variation on this Earth itself that there is no living being on the North Pole and the South Pole because the sun rays fall in an inclined way there. There are living beings around the region where the sun rays fall straight. So, there are no living beings there because of the little distance [from the Sun] on the Earth itself. So, the other stars, the Sun and the Moon are so near or so far. There is no question of the existence of living beings over there at all. (Student said something.) A fixed distance is required for the existence of living beings. The living beings can exist only at such places. This is why there are no living beings on the planet Mars, planet Saturn, or on any planet or its satellites, except one Earth.
Student: What about the stars that are situated light years (*prakaash varsh*) away?
Baba: These illuminating stars are illuminated with the light of the Sun. They are not self-luminous.

Extracts-Part-3

समयः 16.03-17. 25

जिज्ञासुः बाबा, एटम और आत्मा, एटम तो 5 तत्वों से बना हुआ है। और आत्मा तो परे है वो। साइंस लोग 5 तत्वों का ही रिसर्च करते हैं। आत्मा का रिसर्च क्यू नही करते?
बाबाः आत्मा को जानते ही नहीं हैं वो। आत्मा के बारे में न जानते है, न कोई विश्लेषण कर सकते हैं। जिस चीज़ के बारे में उन्हें जानकारी ही नहीं है तो विश्लेषण क्या करेंगे? उनकी है ही इतनी जडत्वमयी बुद्धि कि जिस पेड़ की डाली पर बैठे हुए हैं, सांस ले रहे हैं, जिंदगी जी रहे हैं, उसी पेड की डाली को एटम बम बनाके काट रहे हैं। कैसी तमोप्रधान बुद्धि हो गई है। मनुष्य मनुष्य को काट रहा है। उनको कहेंगे जानवर से भी बदतर। वो क्या आत्मा का विश्लेषण करेंगे? उनके भाग्य में ही नहीं है आत्मा का विश्लेषण। वो ही भगवान बाप आता है तब समझाता है। और वो भी जल्दी नहीं समझते हैं। जब अच्छी तरह नाक रगड़ जाएगी तब कहेंगे - ओ गॉड फादर।
जिज्ञासुः ये भी ड्रामा में नूंध होगा

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबा: ड्रामा तो है ही। हर चीज़ के लिए ड्रामा कहेंगे। उनका ऐसा ही पार्ट है।

Time: 16.03-17. 25
Student: Baba, *atom* and *atma* (soul); atom is made up of five elements. And the soul is beyond this. The scientists do *research* only on the five elements. Why don't they do *research* on the soul?
Baba: They do not know the soul at all. Neither do they know about the soul nor can they make any analysis. When they do not have any information about something at all, then how can they make any analysis? Their intellect itself is so inert that they are cutting the very branch of the tree on which they are sitting, breathing, living the life by making atom bombs. The intellect has become so *tamopradhan.* Human being is cutting (i.e. killing) [other] human beings. They will be called worse than animals. How can they analyze the soul? Analyzing the soul is not at all in their fate. Only when God the Father comes, He explains. And that too they do not understand soon. When their nose is rubbed nicely (they are turned away disapprovingly), then they will say, *O God Father*!
Student: This will also be fixed in the drama?
Baba: Drama does exist. It will be said drama for everything. Their *part* itself is such.

समय: 17.35-19.28
जिज्ञासु: बाबा, पृथ्वी पर तो सृष्टि है। दूसरे ग्रहों पर नहीं है। मगर अन्य सूर्यमालिका है या नहीं है इसका प्रमाण क्या है?
बाबा: क्या नहीं?
जिज्ञासु: सूर्यमालिका है उनमें से सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, बुध,....।
बाबा: सौर जगत की बात कर रहे हैं?
जिज्ञासु: ऐसे अलग सूर्य मालिका है या नहीं?
बाबा: ये तो आप एक कल्पना कर रहे हैं। आपकी कल्पना है कि जैसे ये सौरमण्डल है और उसमें ढ़ेर सारे चांद, सितारे, ग्रह, उपग्रह हैं, ऐसे और भी सूरज होंगे। लेकिन ऐसा नहीं है।
जिज्ञासु: प्रमाण?
बाबा: प्रमाण? ये ही प्रमाण है। जो चीज़ नहीं है उसका प्रमाण क्या? जिस चीज़ को हम देख रहे हैं सामने उसको प्रमाण नहीं मानते। ये क्या बात हुई? जिस चीज़ को हम सामने, प्रत्यक्ष को प्रमाण की जरूरत है? हम कहें सूरज नहीं है। अरे सूरज तो प्रत्यक्ष निकला हुआ है। और जो है ही नहीं उसके लिए हम प्रूफ ढ़ूँढें। अनुमान से नुकसान होता है। अनुमान नहीं लगाना चाहिए। किसी ने कागज़ पे लिख दिया इस सूर्य की तरह हज़ारों सूर्य हैं। हज़ारों सौरमण्डल हैं। अरे लिख देने मात्र से ही हो जाएगा? प्रूफ नहीं चाहिए कुछ?
जिज्ञासु: तस्तरियाँ आकाश से आती हैं कुछ।
बाबा: क्या आती हैं? (जिज्ञासु ने कुछ कहा) उडन तस्तरियाँ। हाँ, जी। ये कुछ नहीं। ये भूत-प्रेत लीला है। छोटा और बड़ा रूप धारण करने वाली।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time: 17.35-19.28
Student: Baba, world exists on the Earth. It does not exist on other planets. But what is the proof of whether there are other solar systems (*suryamalika*) or not?
Baba: What does not exist?
Student: There is solar system among that the Sun, the Moon, the Earth, mercury….
Baba: Are you talking about the solar world?
Student: Do such different solar systems exist or not?
Baba: You are imagining this. It is your imagination that just as this is a solar system and it consists of numerous moons, stars, planets, satellites, similarly, there must be other suns as well. But it is not so.
Student: What is the proof?
Baba: Proof? This itself is the proof. What is the proof for something that does not exist? You do not consider the thing that you see in front as proof. What is this? Is a proof required for something that is visible? We may say that the Sun does not exist. *Arey*, Sun is clearly visible. And should we search for proofs for something which does not exist at all? Assumption (*anumaan*) brings harm. One should not make assumptions. Someone wrote on the paper that there are thousands of suns like this Sun, there are thousands of solar systems. *Arey*, will it be sufficient just by writing? Is a *proof* not required?
Student: Some flying saucers (*tashtariyaan*) come from the sky.
Baba: What come? (Student said something.) Flying saucers? Yes. They are nothing. They are the acts of the ghosts and spirits which assume a small and big form.

समयः 19.42-21.48
जिज्ञासुः बाबा कहते हैं सृष्टि चक्र घुमाओ। ये घुमाना तो बुद्धि में होता है। फिर भी विष्णु के चित्र में उसके दायें हाथ की तर्जनी पर घूमता हुआ बताया जाता है।
बाबाः ठीक है।
जिज्ञासुः तर्जनी और बुद्धि का कोई संबंध है क्या?
बाबाः हाथ का कोई संबंध है? हाथ का क्या कनेक्शन है? हाथ का काम क्या है? हाथ का काम है कैच करना। बुद्धि का काम भी है कोई संकल्प को कैच करना। अब इस हाथ सिर्फ अकेला ही कैच करता है या अपनी सहयोगी उंगलियों के द्वारा कैच करता है? (जिज्ञासुः उंगलियों से) तो उंगलियाँ भी हाथ का काम करती है। जैसे हाथ कैच करने का काम करता है, पकड़ने का काम करता है, ऐसे उंगलियाँ भी मिलकरके कैच करने का काम करती हैं। तो उंगलियाँ भी जैसे कि बुद्धि हो गई। बुद्धि से ही चक्र घुमाया जाता है। अब कोई अपने पूरे हाथ की ताकत लगा देता है तो भी सृष्टि चक्र नहीं घूमता। ज्ञान के चक्र में बुद्धि लगती नहीं है। और कोई सिर्फ छोटी सी उंगली लगा रहा है, तर्जनी उंगली लगा रहा है और उसकी शक्ति से ही सारा सृष्टि चक्र घुमाता रहता है। पूरे हाथ की ताकत लगाने की भी दरकार नहीं है। ये तो अपनी-अपनी बुद्धि का कमाल है। बुद्धि हज़ार नियामत कही जाती है। हर मनुष्यात्मा को ये भगवान की दी हुई देन कहो, ड्रामा की देन कहो, जन्म से ही मिली हुई है। और वो जन्म पूर्व जन्मों के आधार पर मिला है। पूर्व जन्मों में जैसे-जैसे जिसने कर्म किये हैं, वैसी-वैसी उसको बुद्धि की हज़ार नियामत मिल गई।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time: 19.42-21.48
Student: Baba says, rotate the world cycle. This rotation happens in the intellect. Yet, in the picture of Vishnu, it is shown to be rotating on the index finger (*tarjani*) of his right hand.
Baba: Alright.
Student: Is there any relationship between the index finger and the intellect?
Baba: Is there any connection with the hand? What is the *connection* with the hand? What is the task of the hand? A hand's task is to *catch*. The intellect's task is also to *catch* a thought. Well, does a hand *catch* alone or does it *catch* through the co-operative fingers? (Student: through the fingers.) So, the fingers also do the work of a hand. Just as the hand performs the task of catching, of holding, similarly, the fingers also together perform the task of catching. So, the fingers are also like intellect. The cycle is rotated through the intellect only. Well, the world cycle does not rotate even if someone uses the power of his whole hand [like intellect]. The intellect does not remain busy in the cycle of knowledge. While someone uses just the little finger, the index finger and the world cycle keeps on rotating only with its power. There is no need to use even the power of the entire hand. This is the wonder of one's individual intellect. It is said, *Buddhi hazaar niyaamat* (thousand times gift of the intellect). This is a gift of God, or a gift of drama for every human soul which is fixed ever since its birth. And this birth is received on the basis of the past births. Whoever performed whatever actions in the previous births, he received thousand times gift of the intellect according to that.

Extracts-Part-4

समयः 28.01-30.30
जिज्ञासुः बाबा, जो आत्माएं गीतापाठशाला में एक बार भी क्लास को नहीं आते हैं उनको बाबा आने की बात बताना चाहिए कि नहीं? कांटेक्ट भी नहीं रखते।
बाबाः बताने से आ जाते हैं?
जिज्ञासुः बताने से ....संगठन को भी नहीं आते बताने से।
बाबाः अच्छा संगठन में बुलाए तो आ जाते हैं?
जिज्ञासुः नहीं आते।
बाबाः तो फिर?
जिज्ञासुः बाबा आने के बाद आते हैं।
बाबाः तो बाबा में संगठन की ताकत है इसलिए आ जाते हैं। जहाँ प्योरिटी देखेंगे तो यूनिटी बढ़ेगी। गीता पाठशालाओं में अगर प्योरिटी का वातावरण होगा तो जरूर वहाँ संख्या यूनिटि में दिखाई देगी। प्योरिटी नहीं होगी तो यूनिटी भी नहीं ठहरेगी। बुलाने करने की दरकार ही नहीं। क्या करने की दरकार है?
जिज्ञासुः प्योरिटी बढ़ाने की।
बाबाः हाँ। प्योरिटी यूनिटी को खींचती है। पवित्र आत्मा अपवित्र को कशिश करती है। मन्दरों में रोज़ जाते हैं। जाते हैं कि नहीं? जाने वाले भक्त मन्दिरों में रोज जाते हैं या नहीं? जाते हैं। और मस्जिद में? (जिज्ञासु- 8 दिन में एक बार) मस्जिद में रोज़ जाने वालों की संख्या बहुत थोड़ी और जुम्मा-जुम्मा ढ़ेर जाते हैं। खास करके जामा मस्जिद बनाई हुई है। ऐसे ही गिरिजाघर

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

में? रोज़ जाने वाले बहुत थोड़े, ना के बराबर। और संडे-संडे? ढ़ेर के ढ़ेर इकट्ठे हो जाते हैं। तो ये गीतापाठशालाएं भी कोई जुम्मा मस्जिद बन रही हैं। कोई गिरिजाघर बन रहे हैं। अभी ऐसा भी होने वाला है ये मन्दिर, मस्जिद, गिरिजाघर, सब टूट जावेंगे। (जिज्ञासुः एक ही बडा मन्दिर।) एक ही बड़ा मन्दिर रह जावेगा जहाँ सब तीर्थ यात्रा करने जायेंगे।

Time: 28.01-30.30
Student: Baba, should the souls which do not come to the *Gitapathshala* even once be informed about Baba's arrival or not? They do not even maintain the contact.
Baba: Do they come on being informed?
Student: On being informed ... they do not even come for the *sangathan* class (gathering class) on being informed.
Baba: *Accha*, do they come on being called in the *sangathan* (classes)?
Student: They do not come.
Baba: So, then?
Student: They come when Baba arrives.
Baba: So, Baba has the power of unity; this is why they come. *Unity* will increase wherever they see *purity*. If there is an atmosphere of *purity* in the *Gitapathshalas*, then the number [of souls there] will definitely be visible in *unity*. If there is no *purity*, *unity* will also not remain. There is no need to call at all. What is needed to be done?
Student: To increase the *purity*.
Baba: Yes. *Purity* attracts *unity*. Pure soul attracts impure [soul]. We go to the temples everyday. Do we go or not? Do the devotees go to the temples everyday or not? They go. And in the mosques? (Student: Once in eight days). The number of those who go to the mosque everyday is very less and numerous people go on Fridays. They have especially built the Jama Masjid. Similarly, what about the Churches? Those who visit every day are very less; it is negligible. And numerous people gather there on Sundays. So, some *Gitapathshalas* are also becoming *Jumma* Masjids, some (*gitapathshalas*) are becoming churches. Now, it is going to happen that all these temples, mosques, churches will crash. (Student: Only one big temple.) Only one big temple will be left where everyone will go on pilgrimage.

समयः 30.40-36.35
जिज्ञासुः बाबा, ये जो नर्वस सिस्टिम है, कम्प्लीट नर्वस सिस्टम ये ही आत्मा है क्या?
बाबाः ये क्या होता है?
जिज्ञासुः नर्वस सिस्टिम, कम्प्लीट नर्वस सिस्टम, शरीर का जो कम्प्लीट नर्वस सिस्टम है वो ही आत्मा है क्या?
बाबाः नर्वस सिस्टम?
जिज्ञासुः हाँ, नर्वस सिस्टम।
बाबाः नर्वस माना नसों, नाडियों का सिस्टम। वो क्या है?
जिज्ञासुः वो ही आत्मा है क्या?
बाबाः नहीं।
जिज्ञासुः उसके जरिये वो काम होता है।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबाः आत्मा तो ऐसे है जैसे शरीर में राजा। और नसें नाड़ियाँ तो 16000 हैं। उनमें 8000 हैं गंदा खून बहाने वाली। और 8000 हैं शुद्ध खून बहाने वाली। ऐसे ही जो विराट पुरुष आत्मा है उसकी भी 16000 नसें नाडियाँ हैं जिन्हें गोपियां कहा जाता है, गोप-गोपियाँ इनमें आठ हैं रुद्र माला की, गंदा खून बहाने वाली। जन्म-जन्मान्तर के राजाएं। इम्प्योर ब्लड फैलाने वाली।

जिज्ञासुः ये जो प्योर ब्लड है वो आत्मा है क्या?

बाबाः अभी बताया नसें नाडियाँ दो प्रकार की हैं। एक गंदा खून बहाने वाली और एक शुद्ध खून बहाने वाली। तो नसें-नाडियाँ, उनको आत्मा नहीं कहेंगे।

जिज्ञासुः जो खून है ना वो....।

बाबाः खून माना संकल्प। (जिज्ञासुः खून माना संकल्प) जैसे, स्थूल खून होता है। नसों-नाडियों में स्थूल में बहता है, ऐसे ये भगवान की जो 16000 गोप-गोपियाँ हैं, इनमें शुद्ध और अशुद्ध खून बहाने वाली नसें नाडियाँ हैं। जो जन्म-जन्मान्तर के राजाएं हैं रुद्र माला के 8000 ऐसी नसें-नाड़ियां हैं छोटी-बड़ी। वो अशुद्ध खून बहाने वाली हैं। और जो विजयमाला कि आधी है वो शुद्ध खून बहाने वाली है। परन्तु वो नसें नाडियाँ विराट रूप भगवान नहीं हैं। आत्मा सुप्रीम सोल नहीं है। सुप्रीम सोल है उन सबका कंट्रोलर। जैसे 16000 की माला में ऊपर का जो युगल मणका है वो है कंट्रोल्ड करने वाला। ऐसे ही 108 की माला है। उनमें 54 हैं लेफ्टिस्ट और 54 हैं राइटियस।

Time: 30.40-36.35
Student: Baba, is this nervous system, the complete nervous system itself the soul?
Baba: What is this?
Student: The nervous system, the complete nervous system…, is the complete nervous system of the body itself the soul?
Baba: The *nervous system*?
Student: Yes, the nervous system.
Baba: *Nervous* [system] means the *system* of arteries and veins. What is it?
Student: Is that itself the soul?
Baba: No.
Student: The work [in the body] goes on through the nervous system.
Baba: A soul is like a king in the body. And there are 16000 arteries and veins. Among them 8000 carry impure blood and 8000 carry pure blood. Similarly, the Universal form (*viraat purush*) soul also has 16000 arteries and veins, which are called *Gopis, Gop-Gopis*[1]. Among them eight [thousand] belong to the *Rudramala* which carry the impure blood. They are kings of many births who spread *impure blood.*
Student: Is this *pure blood* the soul?
Baba: Now it was told that the blood vessels are of two kinds. One are those which carry impure blood and the other are those which carry pure blood. So, the blood vessels won't be called soul.
Student: The blood...
Baba: Blood means thoughts. (Student: Blood means thoughts?) Just as there is physical blood; it flows in the arteries and veins physically; similarly, the 16000 *Gop-Gopis* of God include the

[1] Cowherds and herd girls

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

arteries and veins which carry pure and impure blood. The 8000 small and big blood vessels of *Rudramala* (the rosary of Rudra), which have been kings for many births, carry impure blood and half [the number i.e. 8000] are those who belong to *Vijaymala* (the rosary of victory) carry pure blood. But those arteries and veins are not the Universal form of God, the soul or the Supreme Soul. The Supreme Soul is the *controller* of all of them (16000 arteries and veins). For example, the top couple beads in the rosary of 16000 are the ones who *control*. Similarly, there is the the rosary of 108. Among them 54 are *leftist* and 54 are *righteous*.

ऐसे ही ब्रह्मा की हज़ार भुजाएं हैं। 500 हैं लेफ्टिस्ट और 500 हैं राइटियस। राइटियस खून बहाने वाली। उनको कह सकते हैं ये बेहद के खून बहाने वाली नसें-नाड़ियाँ रुपी आत्मायें हैं। हरेक आत्मा में अपने-अपने तरीके का खून बहता है। एक के अन्दर का जो खून है, खून की सरणि है, वो दूसरी आत्मा की खून की सरणि से मिलती नहीं है। खून की जाति एक हो सकती है, लेकिन एक जैसा खून सबके अन्दर बहे या दो के अन्दर बहे ये नहीं हो सकता। एक के संकल्प न मिलें दूसरे के संकल्पों से। संकल्प हैं बीज। बीज से फिर वाचा। वाचा के बाद फिर कर्मणा। एक के संकल्प न मिलें दूसरे से। एक की वाचा न मिले दूसरे से। एक के कर्म न मिलें दूसरे से।

जिज्ञासुः ये जो ब्लड ग्रुप हैं चार बताए हैं

बाबाः हाँ, जी।

जिज्ञासुः इसकी वजह क्या है?

बाबाः चार प्रकार की आत्माएं हैं।

जिज्ञासुः कौनसी-कौनसी?

बाबाः जो भी बताया । ओ ग्रुप, ओ पाजिटिव ग्रुप, वो सबमें है। जिसका खून सबमें दिया जा सके। सबसे मेल खा जाए। वो हो गया ओ पाजिटिव। जैसे बारह प्रकार के राशियाँ मानी गई हैं। दुनिया का हर मनुष्य मात्र 12 राशियों में विभाजित किया गया है। ये 12 राशियों के भी 3 ग्रुप हैं। और एक-एक ग्रुप में 4-4 प्रकार की जातियाँ हैं। ऐसे ही, मनुष्यों का खून भी 4 प्रकार की जातियों का है।

जिज्ञासुः कौनसी जातियाँ है?

बाबाः अब तो कोई भी नाम दे दो। नाम तो ये वैज्ञानिकों ने दिये हुए हैं ना। वैज्ञानिकों की भाषा ही अलग है। इतना तो जानते हैं कि हाँ चार प्रकार का खून है।

Similarly, there are thousand arms of Brahma. [Among them] 500 are *leftist* and 500 are *righteous*, which carry *righteous* (pure) blood. It can be said about them that they are the souls in the form of blood vessels who carry blood in an unlimited sense. Different kind of blood flows in each soul. The blood of one, the group of blood of one does not match with the group of blood of another soul. The blood group can be one, but it cannot be possible that the same kind of blood flows in everyone or in two persons. The thoughts of one do not match with the other. Thought is the seed. Seeds give rise to words. Words are followed by actions. Thoughts of one do not match with the other. The words of one do not match with the other. Actions of one do not match with the others.

Student: The four blood group which has been described...

Baba: Yes.
Student: What is the reason for it?
Baba: There are four types of souls.
Student: Which souls?
Baba: As it was said, *'O' group*, *'O' positive group* is in everyone. The blood which can be donated to everyone and matches with everyone is the *'O' positive*. Just as there are twelve zodiac signs. Every human being of the world is classified into 12 zodiac signs. There are 3 groups of these twelve zodiac signs too. And there are four categories in every *group*. Similarly, human blood is also of four categories.
Student: Which are those categories?
Baba: Well, you can assign any name. These names have been assigned by the scientists, haven't they? The language of the scientists is different. At least this much is known that blood is of four kinds.

Extracts-Part-5

समयः 40.50-42.42

जिज्ञासुः मुरली द्वापरयुग में शास्त्रों के रूप में गाया जाता है। तो अव्यक्त वाणी।

बाबाः मुरली द्वापरयुग में शास्त्रों के रूप में गाई जाती है? अगर मुरली ज्यों की त्यों द्वापरयुग में शास्त्रों के रूप में गाई जाए फिर तो भगवान का स्वरूप प्रत्यक्ष होना चाहिए। भगवान की पहचान द्वापरयुग से उड़ जाती है या बनी रहती है? उड़ जाती है। संगमयुग की बात ही द्वापरयुग में उड़ जाती है।

जिज्ञासुः ये पूछा है बाबा अव्यक्त वाणी का किस रूप में गायन होता है?

बाबाः अव्यक्त वाणी भी तो मनुष्य रूप है। जैसे कवि लोग होते हैं अपनी कविता करते हैं। वो कविता का वास्तविक अर्थ क्या है वो खुद भी नहीं जानते। भगवान बाप आकरके उन शास्त्रों का, उन कविताओं का, उन श्लोकों का सही अर्थ बताते हैं। ऐसे ही ये जो अव्यक्त वाणी है वो भी मानवीय वाणी है। लेकिन निराकारी स्टेज में सुनाई गई है इसलिए उसमें भावना सच्ची भरी हुई है। उसका अर्थ भगवान बाप ही बताते हैं। एक अव्यक्त वाणी ही ऐसी है जो मुरली के महावाक्यों को कहीं भी खंडन नहीं करती। बाकी दुनिया में जितने भी शास्त्र हैं, जितनी भी वाणियाँ हैं, वो सब एक दूसरे का खंडन करने वाली हैं।

Time: 40.50-42.42
Student: Murli is praised in the form of scriptures in the Copper Age. So, [what about] avyakta vani?
Baba: Is murli praised in the Copper Age in the form of scriptures? If murli is praised as it is in the form of scriptures in the Copper Age, then God's form should be revealed. Does God's recognition vanish or does it remain intact in the Copper Age? It vanishes. The very topics of the Confluence Age vanish in the Copper Age.
Student: Baba, it has been asked, in which form is the avyakt vani praised?
Baba: Avyakt vani is also a [narration through a] human form. For example, when poets write poems, they themselves do not know the actual meaning of that poem. God the Father comes and tells the correct meaning of those scriptures, poems [and] *shlokas*. Similarly, this avyakt vani is also a human version. But it has been narrated in an incorporeal *stage*; this is why there are true feelings in it. God the Father alone narrates its meaning. It is avyakt vani alone which

does not clash with the versions of murlis anywhere. All the other scriptures of the world, all the other versions clash with each other.

समयः 42.47-43.22

जिज्ञासुः बाबा, बीज रूप आत्माओं के शरीर बर्फ में दबेंगे। अपने-अपने समय पर आत्मा प्रवेश करती है जब बर्फ हट जाएगा। इसी तरह से जो सतयुग में प्राणी रहेंगे सतोप्रधान, जैसे गाय, मोर, तो इनके भी शरीर कुछ बर्फ में दबेंगे?

बाबाः कुछ क्यों? जो भी जातियाँ होंगी इस तरह की दूसरों को दुःख न देने वाली वो रहेंगी। दुःखदायी प्राणी नहीं रहेंगे। सुखदायी सब रहेंगे।

Time: 42.47-43.22

Student: Baba, the bodies of the seed-form souls will be buried in ice. When the ice is removed, the soul enters in it at its destined time. Similarly, the animals which will be *satopradhan* in the Golden Age; for example, cows, peacocks; so, will the bodies of few among them also be buried under ice?

Baba: Why few? All the species like these, which do not give sorrow to others, will survive. The living creatures which give sorrow will not survive. All those which give happiness will survive.

समयः 43.27-45.40

जिज्ञासुः बाबा, ये जो श्वास लेते हैं और श्वास छोड़ते हैं ये श्वास आत्मा है क्या?

बाबाः श्वास तो हवा है।

जिज्ञासुः हवा है। फिर आत्मा क्या चीज़ है?

बाबाः ये 5 तत्वों में से...।

जिज्ञासुः आदमी श्वास के बिना जीता नहीं है। श्वास अगर नहीं हुआ तो आदमी जीता नहीं है। तो उसका मतलब क्या हुआ?

बाबाः आपने सुना ही नहीं है कि ऋषि मुनि ऐसे भी होते थे जो श्वास - प्रश्वास को बंद कर देते थे। सुना कि नहीं सुना? (जिज्ञासु - सुना) फिर? श्वास और प्रश्वास ये तो हवा है। 5 तत्वों में से एक तत्व है। ये कोई आत्मा नहीं है। 5 तत्वों से आत्मा तो तुरीया है। बिल्कुल अलग। उसको 5 तत्वों में बांधा नहीं जा सकता। बंधन में आ जाती है। वो एक अलग बात है। हवा को, प्राणवायु को हम प्राण नहीं कहेंगे। ये तो मनुष्य गुरुओं ने धतिंग निकाले हैं। भगवान तो स्पष्ट बताते हैं आत्मा एक ज्योति है, रोशनी है, सितारा है, अति सूक्ष्म सितारा। इतना सूक्ष्म है जो इन आँखों से तो क्या, जैसे छोटे-छोटे कीटाणु माइक्रोस्कोप से देखे जाते हैं, ऐसे वो वैज्ञानिक यंत्रों से भी आत्मा नहीं देखी जा सकती। इतना सूक्ष्म अणु है। वो कोई वायु नहीं है। प्राण नहीं है। जिसे प्राण वायु कह दिया है। (जिज्ञासु - छठा तत्व।) वो छठा तत्व, तुरीया तत्व परमधाम है, ब्रह्मलोक, ब्रह्म तत्व है। वो भी जड़ है। लेकिन आत्मा तो? आत्मा तो चैतन्य है।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Time: 43.27-45.40
Student: Baba, we inhale and exhale; is this breath the soul?
Baba: Breath is air.
Student: It is air. Then what is a soul?
Baba: Among the five elements...
Student: A person cannot live without air. If there is no air, a man cannot live. What does it mean?
Baba: You have not heard at all that there also used to be such saints and sages who regulated their inhalation and exhalation. Did you hear or not? (Student: I have heard.) Then? What you inhale and exhale is air. It is one element among the five elements. It is not a soul. A soul is unique from the five elements, it is completely different. It cannot be bound in five elements. It gets bound. It is a different thing. Air [and] oxygen (*praanvaayu*) will not be called life (*praan*). These are the ostentations made by the human gurus. God tells [us] clearly, the soul is light, brightness, a star, a very subtle star. It is so subtle that leave aside the topic of [seeing through] these eyes, the soul cannot be seen even through the scientific instruments like the microscope through which small microbes are seen. It is such a minute atom. It is not air, it is not life which has been named oxygen. (Student: Sixth element.) That sixth element, the unique element is the Supreme Abode, *Brahmlok,* the element *Brahm.* That too is non-living. But what about the soul? A soul is living.

समयः 45.52-47.51
जिज्ञासुः बाबा, कहते हैं ब्रहमा की मत मशहूर है। ऐसे ही शंकर और विष्णु की मत मशहूर नहीं।
बाबाः शंकर शब्द का अर्थ क्यों भूल जाते हैं? शास्त्रों में जितने भी नाम आए हैं वो उनके काम के आधार पर आए हैं या ऐसे ही आ गए? तो शंकर का अर्थ क्या है? शंकर माना? वर्णशंकर माना क्या? कई वर्ण मिलकरके एक बन जाएं। माता ब्राहमण वर्ण की और पति, पिता? दूसरे वर्ण का, शूद्र वर्ण का हो। तो जो संतान पैदा होगी, उसे क्या कहा जाएगा? वर्ण शंकर। तो ऐसे ही शंकर का जो पार्ट है उसमें ब्रहमा भी है मौजूद, उसमें राम वाली आत्मा भी मौजूद है। और शिव की आत्मा भी मौजूद है। इसलिए उसको सिर्फ ब्रहमा से टैली नहीं करना है। ब्रहमा एक है या अनेक हैं? (जिज्ञासु - अनेक।) अनेक हैं ब्रहमा। और शंकर तो? शंकर तो एक ही है। विष्णु के भी अनेक रूप दिखाए हैं। ब्रहमा को हज़ारों भुजाएं दिखाई जाती हैं। विराट विष्णु की भी ढ़ेरों भुजाएं दिखाई जाती हैं। शंकर का पार्ट ही ऐसा है कि आदि से लेकर अंत तक सदाकाल का सहयोगी भुजा कोई बन ही नहीं सकती।

Time: 45.52-47.51
Student: Baba, it is said that Brahma's directions are famous. Similarly, Shankar's and Vishnu's directions are not well-known.
Baba: Why do you forget the meaning of the word 'Shankar'? Are all the names that have been mentioned in the scriptures based on the tasks performed or have they been mentioned simply? So, what is the meaning of Shankar? What is meant by Shankar? What is meant by *varnashankar*? Many castes (*varna*) mix up to become one. Mother belongs to the Brahmin class and the husband, the father? He belongs to another class, to the *shudra* class. So, what will

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

the progeny that is born be called? *Varna Shankar* (hybrid). So similarly, in Shankar's *part*, Brahma is present as well as the soul of Ram is present. And the soul of Shiv is also present. This is why, don't *tally* him only with Brahma. Is Brahma one or many? (Student: Many.) There are many Brahma. And Shankar? Shankar is only one. Vishnu has also been shown in many forms. Brahma is shown to have thousands of arms. Universal [form of] Vishnu is also shown to have numerous arms. Shankar's *part* itself is such that nobody can become a co-operative arm forever from the beginning till the end.

समयः 47.55-49.20

जिज्ञासुः बाबा, परमधाम से जो पहला आदमी आता है, आत्मा आती है पहली, तो उसके लिए शरीर कहाँ से बना?

बाबाः उसका शरीर यहीं योगबल से तैयार हो जाता है। जो विकारी शरीर के 5 तत्व हैं वो यहीं निर्विकारी बना करके जाती है। उसमें कोई रोग शोक नहीं रहता। बर्फ में ढ़क जाती है। कर्मातीत होने के बाद वो शरीर को यहीं त्यागती है और परमधाम में पहुँच जाती है। अपने टाइम पर फिर प्रवेश करती है। वो कोई एक शरीर थोड़ेही है। नम्बरवार लाखों की तादाद में ऐसे शरीर हैं जो योगबल से अपनी काया को कंचन बनाते हैं। इसलिए मुरली में बोला है मैं तुम्हारी आत्मा और शरीर रूपी नैया, दोनों का खिवैया एक बाप हूँ। ऐसे नहीं आत्मा को ही पार ले जाता हूँ पारलोक में। ये शरीर रूपी नवैया भी इस वैतरणी नदी के पार इस संसार विषय सागर के पार खीरसागर में चला जाता है। सिर्फ आत्मा ही नहीं जाती है। क्या? ये शरीर भी पार जाता है।

Time: 47.55-49.20
Student: Baba, how is the body for the first person, the first soul that comes from the Supreme Abode made?
Baba: His body gets ready here itself through the power of *yog*. They make the five elements of the vicious body into vice less here itself. There is no disease, no pain in it. It is covered by ice. After becoming *karmaatiit* (the stage beyond karma), it renounces the body here itself and reaches the Supreme Abode. Then, it enters again at its destined time. It is not about just one body. There are hundred thousands bodies *number* wise (according to their *purusharth*) which rejuvenate their body through the power of *yog*. This is why it has been said in the murli, I the one Father am the boatman, of both your soul and the boat-like body. It is not that I take only your soul across, to the Supreme Abode. This boat-like body also sails across this river of vices (*vaitarni nadi*), across this world, the ocean of vices (*vishaysagar*) to the ocean of milk (*kshiirsagar*). It is not just the soul that sails across. What? Even this body sails across.

Extracts-Part-6

समयः 49.23-51.35

जिज्ञासुः बाबा, सतयुग में योगबल से संतान पैदा होती...।

बाबाः योगबल माना क्या? और भोगबल माना क्या? ये समझना पड़ेगा।

जिज्ञासुः नहीं। मेरा प्रश्न है सतयुग में योगबल से संतान पैदा होगी...।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

बाबाः योगबल माना क्या? (जिज्ञासुः याद शक्ति।) वहाँ याद करेंगे भगवान को? वहाँ भगवान की याद, भगवान का स्वरूप याद होगा देवताओं को? (जिज्ञासु - नहीं।) फिर?
जिज्ञासुः फिर संतान कैसे पैदा होती है?
बाबाः इसलिए बताया कि आज के मनुष्यों को कहेंगे भ्रष्टाचारी। और देवताओं को कहेंगे श्रेष्ठाचारी। वो श्रेष्ठ इन्द्रियों से आचरण करके संतान पैदा करते हैं। श्रेष्ठ इन्द्रियाँ हैं ज्ञानेन्द्रियाँ। जैसे आँख, ये श्रेष्ठ इन्द्रिय है। और भ्रष्ट इन्द्रियाँ हैं - जो शरीर के भ्रष्ट भाग में काम करती हैं।
जिज्ञासुः मेरा सवाल ये है कि ये जो सतयुग की बातें बताई आपने तो संगमयुगी जो लक्ष्मी-नारायण है वो वायब्रेशन्स से संतान निर्माण करती हैं। तो योग और वायब्रेशन में क्या फर्क है?
बाबाः वायब्रेशन पहले परिवर्तन करता है। और जो इन्द्रियों का परिवर्तन होता है वो बाद में होता है। स्थूल में ज्यादा ताकत है या सूक्ष्म में ज्यादा ताकत है? (जिज्ञासुः सूक्ष्म।) तो वायब्रेशन ज्यादा शक्तिशाली होता है या आँख से जो हम दृष्टि से देखते हैं या कर्मेन्द्रियों से कर्म करते हैं उन कर्मों में ज्यादा ताकत है? कर्मों में ज्यादा ताकत है? (जिज्ञासु - नहीं है।) हाँ, कर्मों में ताकत नहीं है। जो वायुमण्डल हम एकाग्रता का बनाएंगे, उसमें ज्यादा ताकत होगी। उस वायुमण्डल के बीच में जो भी आ जाएगा अज्ञानी भी वो भी तब्दील हो जाएगा। जैसे ऋषियों, महर्षियों के आश्रमों के लिए ये गायन है कि शेर और बकरी भी चले जाते थे उनके नज़दीक तो उनका वायब्रेशन बदल जाता था।

Time: 49.23-51.35
Student: Baba, children are born with the power of *yoga* in the Golden Age…
Baba: What is meant by the power of *yoga* (*yogbal*)? And what is meant by the power of physical pleasures (*bhogbal*)? You will have to understand this.
Student: No. My question is that children will be born through the power of *yoga* in the Golden Age.
Baba: What is meant by the power of *yoga*? (Student: The power of remembrance.) Will you remember God there? Will the deities remember God; will they remember the form of God? (Student: No.) Then?
Student: Then, how are children born?
Baba: This is why it has been said that today's people will be called *bhrashtacari* (the one who finds pleasure through the lowly organs). And deities will be called *shreshtachari* (virtuous). They reproduce by performing actions through elevated organs. The elevated organs are the sense organs. For example, the eyes are elevated organs. And the corrupt organs are the ones which work in the corrupt parts of the body.
Student: My question is – the topics of the Golden Age that you narrated; so, the Confluence Age Lakshmi and Narayan reproduce through vibrations. So, what is the difference between *yoga* and vibrations?
Baba: Vibrations are transformed first. And the transformation of organs takes place later. Is there more power in physical things or in subtle things? (Student: Subtle.) So, are the vibrations more powerful or is the vision of our eyes through which we see more powerful or are the actions that we perform through the *karmendriya* more powerful? Is there more power in the actions? (Student: No.) Yes, there is no power in actions. The atmosphere of concentration which we make will have more power. Whoever comes in that atmosphere, even if he is an

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

ignorant person, he will change. Just as it is praised about the hermitages of sages [and] saints that even if lions and goats used to go near them, their vibrations used to change.

समयः 53.16-54.12

जिज्ञासुः बाबा, बाबा कहते हैं कि मैं देहअभिमानियों से बात नहीं करता हूँ। अभी तक कोई आत्मअभिमानी नहीं बने।

बाबाः माने बेसिकली बिन्दु रूप स्टेज में एक सेकण्ड तक टिकने वाले कोई भी नहीं बने? अरे दीदी-दादियाँ, उनकी अभी तक भी समस्या है बिन्दी को कैसे याद करें? इसका मतलब वो आत्माभिमानी नहीं बने। इसलिए मुरली में बोला है आत्मा रूपी सुई की सारी कट उतरने पर तुम डायरेक्ट बाप से सीखोगे। ऐसे नहीं अम्मा ब्रह्मा के थ्रू सीखोगे या ब्रह्माकुमारियों के थ्रू सीखोगे। डायरेक्ट बाप तुमको सिखाने वाला होगा। ऐसे नहीं कहेंगे कोई आत्माभिमानी बने ही नहीं है। नम्बरवार बने हैं।

Time: 53.16-54.12

Student: Baba, Baba says that I do not talk to body conscious ones. Nobody has become soul conscious so far.

Baba: Does it mean that nobody has become the ones to stabilize in the point-form *stage basically* for a *second*? *Arey*, Didis-Dadis still face the problem, how should we remember the point? It means that they have not [yet] become soul conscious. This is why it has been said in the murli, when the entire rust of the needle like soul is removed, you will learn directly from the Father. It is not that you will learn through the mother Brahma or through the Brahmakumaris. The Father will directly teach you. It will not be said that nobody has become soul conscious at all. They have become number wise (according to their *purusharth*).

समयः 55.40-01.02.27

जिज्ञासुः बाबा, ये सृष्टि रूपी घडी जो है, सेकण्ड काँटा, मिनट काँटा कौन है?

बाबाः काँटे दो हैं या तीन हैं? (जिज्ञासु- तीन हैं।) हाँ, जी। एक कांटा है बहुत धीमी-धीमी गति से घूमता है। वो बहुत मोटा काँटा है। उससे ज्यादा तीखा कांटा है। वो बारह घंटे में कितने चक्कर लगा लेता है? बारह चक्कर लगाता है। मोटा काँटा? बारह घंटे में? अरे? इतना नहीं मालूम? जो घडी का मोटा कांटा है वो 12 घंटे में कितने चक्कर लगाता है? एक चक्कर लगाता है। और जो पतला-पतला लम्बा है वो कितने चक्कर काटता है? (जिज्ञासु - 12।) 12 चक्कर काटता है। 12 घंटे में। और एक और है। क्या? वो सेकण्ड का कांटा है। एक मिनट में 60 सेकण्ड घूम जाता है। जैसे बाप कहते हैं मुझे घडी-घडी याद करो। अभी तीनों कांटे समझ में नहीं आए? कौन-कौन हैं? क्या-क्या हैं? बताओ।

जिज्ञासुः सेकण्ड कांटा जो है वो शंकर बाबा का है।

बाबाः बता डालो।

जिज्ञासुः सही है या झूठ है।

बाबाः पेहले बता जाओ। तीनों को बता दो। फिर उसके बाद दूसरों से पूछें।

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

जिज्ञासुः दूसरा कांटा जो है बडा तास का जो कांटा है वो ब्रह्मा बाबा है।
बाबाः मोटा कांटा? (जिज्ञासु - मोटा कांटा।) अच्छा। तो चलो कम से कम इतना तो हुआ कि नौ दिन चले अढ़ाई कोस। क्या? कितने दिन चले? नौ दिन चलते रहे, चलते रहे, 12 दिन चलते रहे, चलते रहे, कितना चला? बहुत थोड़ा। तो ब्रह्मा बाबा अपने सारी जिंदगी की पढ़ाई पढ़ते हैं एक प्वाइंट की पढ़ाई गीता का भगवान कौन? भगवान सर्वव्यापी नहीं। वो पढ़ाई उनकी पूरी हुई? (जिज्ञासु - नहीं।) अभी भी पूरी नहीं हुई। तो क्या कहेंगे? कौनसी सुई है? (जिज्ञासु - बड़ी।) मोटी सुई। उसके बाद? उसके बाद पतली सुई है लम्बी वाली। वो 12 घंटे में 12 चक्कर लगा लेती है। वो कौन है? प्रश्न तो मजेदार आया है। जवाब भी निकाल लेना चाहिए। चलो एक तो क्लीयर हुआ। क्या? (जिज्ञासु - बड़ा कांटा।) हाँ। बड़ा कांटा तो क्लीयर हो गया। ये बड़ा कांटा है। क्या? सबसे बड़े दुःख की बात कौनसी है? गीता का भगवान ये सबसे बड़े दुख की बात है। भगवान सर्वव्यापी नहीं। भगवान एकव्यापी है। एकव्यापी है सबसे बड़े सुख की बात। और सर्वव्यापी है सबसे बड़े दुःख की बात। इस सारे सृष्टि चक्र में मुख्य कार्यकर्ता कितने हैं? (जिज्ञासु - तीन।) तो अभी तक इशारा दे दिया। अब तो बता दो।

Time: 55.40-01.02.27
Student: Baba, in this world clock, who represents the hand of seconds, and the minute hand?
Baba: Are there two or three hands? (Student: There are three.) Yes. One hand moves very slowly. It is a very thick hand. There is a hand faster than it. How many rotations does it make in twelve hours? It rotates twelve times. And what about the thick hand? [How many times does it rotate] in twelve hours? *Arey*! Don't you know even this? How many times does the thick hand of the clock rotate in 12 hours? It rotates once. And how many times does the thin, long hand rotate? (Student: 12.) It rotates 12 times in 12 hours. And there is one more. What? It is the hand of seconds. It rotates 60 seconds (i.e. 60 times) in a minute. For example, the Father says, Remember Me again and again. Did you not understand the three hands yet? Who are they? What are they? Say.
Student: The hand denoting seconds is Shankar Baba.
Baba: Speak up.
Student: Is it right or wrong?
Baba: First say. Tell about all the three. After that we can ask others.
Student: The second hand, the big hand of hour is Brahma Baba.
Baba: The thick hand? (Student: The thick hand.) *Achha*. So, at least it happened that you walked for nine days and covered a distance of [just] two and a half miles (*nau din chaley adhai kos*). What? How many days did you walk? You walked continuously for nine days, walked for 12 days and how much distance did you cover? Very little. So, Brahma Baba after studying the entire knowledge in his life, did his study of a point of knowledge, 'who is the God of the Gita, God is not omnipresent' was completed? (Student: No.) It has not yet completed. So, what will be said? Which needle [of the clock] is he? (Student: The big one.) The thick needle. After that? After that there is the thin, long needle. It rotates twelve times in 12 hours. Who is it? The question is indeed interesting. You should obtain the answer as well. Alright, at least one [hand] became *clear*. What? (Student: The big hand.) Yes. The big hand has become *clear*. This one is the big hand. What? Which is the saddest topic? The topic of 'the God of the Gita' is the saddest thing. God is not omnipresent. God is present in one. The topic that [God is present] in one is a most joy-giving topic. And the topic [that God] is omnipresent is the saddest topic. How many

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

main actors are there in the entire world cycle? (Student: Three.) So, a hint has been given so far. Tell me at least now.

जिज्ञासुः बड़ा कांटा ब्रह्मा, छोटा कांटा राम वाली आत्मा।
बाबाः छोटा कांटा राम वाली आत्मा?
जिज्ञासुः पतली जो है वो विष्णु।
बाबाः वो विष्णु है। वो सबसे ज्यादा चक्कर काट लेती है? उसकी बुद्धि बहुत तीखी है? सेवा के चक्कर तीनों सुईयां काटती हैं ना। तीनों सुईयाँ सेवा का चक्कर काटती हैं ना। बाबा कहते हैं ना सेवा के चक्कर लगाएंगे तो चक्रवर्ती राजा बनेंगे। जो सबसे जास्ती सेवा के चक्कर काटेंगे तो सबसे बड़े राजा बनेंगे। लौकिक दुनियाधोरी के चक्कर काटते रहें बुद्धि, कर्मेन्द्रियाँ, वाचा तो सबसे बड़े बनेंगे या छोटे बनेंगे? फिर तो छोटे बन जाएंगे। कहाँ चक्कर काटे? ईश्वरीय सेवा में मनसा भी लगी रहे, तन से भी लगे रहें और वाचा से भी लगे रहें। बड़े से बड़ा जो चक्कर काटने वाले बनेंगे वो बड़े राजा बनेंगे। इसलिए खूब स्वदर्शन चक्कर घुमाओ, चक्कर काटो ईश्वरीय सेवा के तो चक्रवर्ती राजा बनेंगे। तो कौनसी सुई सबसे जास्ती चक्कर काटती है? (जिज्ञासु - सेकण्ड कांटा।) सेकण्ड काँटा? तो कौन है? (जिज्ञासु - राम वाली आत्मा।) एक है घड़ी-घड़ी चक्कर काटने वाली और एक है घड़ी-घड़ी तो चक्कर नहीं काटती लेकिन? लेकिन 12 घंटे में एक चक्कर जरूर काट लेती है। तीन ही तो हैं। ब्रह्मा, विष्णु और शंकर। ब्रह्मा का पार्ट भी है तो विष्णु का पार्ट भी है वैष्णवी देवी। शंकर का भी पार्ट है।

Student: The big hand is Brahma; the small hand is the soul of Ram.
Baba: Is the small hand the soul of Ram?
Student: Yes, and the thin one is Vishnu.
Baba: It is Vishnu? Does it rotate the maximum number of times? Is its intellect very sharp? All the three needles go around for service, don't they? All the three needles go around on service, don't they? Baba says that if you go around for service, you will become *cakravarti* king (one whose kingdom is spread wide), doesn't he? The ones who will take the maximum rounds on service will become the biggest king. If the intellect keeps wandering in [the thoughts of] the *lokik* worldly affairs, the *karmendriya*, the speech, then will you become the biggest king or a small king? Then you will become a small king. Where should your intellect revolve? The mind should also remain busy in Divine service (of God), we should remain busy through the body as well as through the speech [in the service of God]. Those who go on the biggest round will become big kings. That is why rotate the discus of self realization a lot, go on rounds for Divine service (of God), then you will become a *cakravarti* king. So, which needle revolves the most? (Student: The second's needle.) The second's needle? So, who is it? (Student: The soul of Ram.) One [hand] revolves every moment and one [hand] does not rotate every moment, but it definitely revolves once in 12 hours. There are only three. Brahma, Vishnu and Shankar. There is Brahma's *part* as well as Vishnu's *part*, i.e. *Vaishnavi Devi*. There is Shankar's *part* as well.
……………………………………………………………………………………………

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info

Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.

Email id: a1spiritual@sify.com
Website: www.pbks.info